International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-10-2025, Accepted: 05-11-2025, Published: 21-11-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 96-98

विसंगतियों के दायरे में वृद्ध और देवेश ठाकुर की कहानियाँ

डॉ. राम बिनोद रे
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यलय, कासरगोड, केरल, भारत

सारांश
उत्तरआधुनिक युग मरीन वैचारिक चेतना के प्रवाह ने पारंपरिक और प्रगतिशील विचारों ने दुनिया को झकझोर दिया है, जिसमें स्त्री, बच्चे, वृद्ध, दलित आदिवासी समाज की घुटन ने एक अन्वेषन के राह को पकड़ा है। बदलते अन्वेषणात्मक चिंतन ने साहित्य को प्रभावित किया है। औद्योगिक जगत और उपनिवेशवादी चिंतन के इस परिवेश ने मानवीय सम्बन्धों के घुटन को सामने रखा है। व्यक्ति वस्तु का पराया हो गया है। हृदय के स्थान पर बुद्धि ने ग्रहण कर लिया है। संस्कृति का विकृत रूप ने वृद्धों के प्रति नजरिया बदला है। भारतीय सांस्कृतिक समाज को बदलकर उपेक्षित समाज में बादल दिया है।

मूल शब्द: वृद्धाव्यवस्था, मनोवैज्ञानिक विचार, अनैतिक व्यवहार, सांस्कृतिक संक्रामण, आत्म–विछेपर्ण, अकेलापन, अनैतिकता, आत्म–ग्लानि

वृद्धाव्यवस्था एक प्रकृतिक संरचना है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ 'परिपक्यता' से है, जिसमें प्रेम, आदर जीवन का सारगर्भित अनुभव से है। सभ्यता और संस्कृति की पहचान है। युवा वर्ग उनके अनुभवों को सांझा करने में सक्षम नहीं है। इसके पीछे व्यस्थता, एकल परिवार के मूल्यों का विघटन प्रमुख कारण है। वर्तमान में वृद्ध को समस्या का पर्याय बना दिया है। हिन्दी साहित्य में वृद्धाव्यवस्था की समस्या को विमर्श साहित्य के रूप में स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रेमचंद की कहानियों में वृद्ध के प्रति होने वाले घृणा, अनैतिक व्यवहार, जड़ता, निराशा के भावों को उज्जागर किया है। इसी प्रकार भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत', उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी', काशीनाथ की कहानी 'अपना रास्ता लो बाबा', शिवानी की कहानी 'पूतों वाली' उदयप्रकाश की कहानी 'छप्पन तोले की करधन', चित्रा मुद्गल की कहानी 'दुलहिन', हरिशंकर परसाई का 'भोलाराम का जीव', कृष्णा सोबती की कहानी 'ऐ लड़की', संजीव की कहानी 'माँ' जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'रामू की दादी', मैत्री पुष्पा की कहानी की कहानी 'तुम किसकी हो बिन्नी' आदि प्रमुख कहानियाँ हैं। वृद्धाव्यवस्था में बुजुर्गों का मन, व्यवहार, कार्य, इच्छा बच्चों के समान हो जाता है। व्यक्ति, परिवार, समाज को वृद्धाव्यवस्था के मनोविज्ञान को समझना होगा। एरिक एरिक्सन ने इसी मनोविज्ञान को समझने का प्रयास किया है। चूंकि शारीरिक क्षय के साथ–साथ मानसिक क्षय की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। निराला ने अपनी कविता 'मैं अकेला' में स्पष्ट लिखा है –

'मैं अकेला देखता हूँ,
देखता हूँ, आ रही
मेरे दिवस की संध्या बेला'

वृद्धाव्यवस्था जीवन के निवेश की पूंजी है। जो सदैव अपने परिजनों से आत्मीयता, प्रेम, सहृदयता का व्यवहार बनाए रखता है। वह परिवार के सभी सदस्यों की उपस्थिति अनिवार्य मानता है। 'साथ–साथ' कहानी में संगीता और अवस्थी अपने बेटे अंकुर के साथ रहने का ख्वाब देखता है।' वह देख रही थी कि अंकुर के आने से घर घर–सा लगाने लगा है। हलचल बढ़ गई है वह और बहु शालिनी चौके में काम करते हुए हस–हस कर बतिया रहे हैं। बच्चे मेरी दादी, मेरी दादी कहते हुए उससे चिपक रहे हैं।'[1] अक्सर बुजुर्गों को संयुक्त परिवार में रहना पसंद आता है। पर संयुक्त परिवार की अपनी समस्याएं हैं। बेटा अंकुर के आने के बाद घर रसोई का काम, बच्चों का शोरगुल के कारण अपने पति अवस्थी से बात करने का समय निकाल पाना दुर्भर हो जाता, घर सदेव अव्यवस्थित–सा लगाने लगता है। व्यवस्थित दिनचर्या में खलन पड़ने लगता है। दूसरी तरफ बच्चे अपनी सुविधा के अनुरूप बुजुर्गों की इस मनोव्यवस्था का उपयोग करना चाहते हैं। इलाज के नाम पर अंकुर संगीता को विदेश ले जाने का प्रस्ताव रखता है, जिसे सुनकर संगीता सिहर जाती है। अंकुर की बात सुनकर 'अवस्थी जी पहले तो यह सुनकर अंकुर को देखते रह गए थे। फिर संभलकर बोले–ये हाँ, हाँ अपनी माँ से पूछ ले।'[2] हाँ–हाँ में अवस्थी जी की पीड़ा, अकेलेपन की पीड़ा, अपने जड़ से उखड़ने की पीड़ा दर्शाता है। घर में बड़े बुजुर्ग बच्चों से केवल अपने लिए समय निकालने की अपेक्षा रहती है। समय के अभाव में बच्चे समय नहीं निकाल पाते। जीवन के आपा–धापी में अपने स्वार्थ और सुविधा को सर्वोपरि मानकर माता–पिता का इस्तेमाल करते हैं। 'अंकुर ने तो हमारा इस्तेमाल किया है। तुम्हें आने के लिए नहीं पूछा और मुझे यहाँ ले जाकर आया की तरह ..। संगीता आगे कुछ बोल नहीं पाई। उसकी आखे छल–छला आई थी।'[3]

सिनेमा हॉल में पीठ के बल गिरने के कारण अस्पताल में पति–पत्नी के बीच का गहन संवेदनात्मक जुड़ाव तब दिखता है जब संगीता कहती है 'आज का दिन भी कितना मनहूस है ..।'[4] दोनों के बीच आत्मन प्रक्रिया और एक–दूसरे के साथ रहने को संकल्पबद्ध है। विलियम जेम्स की आत्मन की अवधारणा का स्वरूप व्यक्तित्व में दिखाई पड़ता है। आत्मन के प्रकार–सांसारिक आत्मन, सामाजिक आत्मन और आध्यात्मिक आत्मन इन तीनों आत्मन से 'सांसारिक आत्मन से व्यक्ति का शरीर तथा उसके व्यक्तिगत धरोहर जैसे धन, दौलत, रुपया, घर, कपड़ा, फर्नीचर आदि को रखते हैं। वैसे आत्मन जिसका निर्माण दूसरों द्वारा व्यक्ति को स्थापित पहचान पर आधारित होता है। सामयिक आत्मन कहलाता है। एक व्यक्ति का आत्मन माता, पिता, बहन, भाई, पत्नी आदि है। इसका मतलब यह हुआ कि जिस सीमा तक व्यक्ति दूसरों के साथ अंतक्रिया करता है। वह विभिन्न समजीत आत्मन विकसित कर लेता है।'[5] कहानी में देवेश ठाकुर जी ने संगीता और अवस्थी के माध्यम से आत्मन की प्रक्रिया, गति और संवेदना युक्त भाव को मार्मिकता पूर्वक चित्रित किया है। 'वास्तव में तो वृद्धाव्यवस्था इन्सानों की आत्मा को ही जीर्ण बना देती हैं। उसे तार–तार कर देती है और कुछ बोलने का स्कोप भी नहीं छोड़ती। अपने रचे संसार में अपनी अवहेलना देखने को अभ्यस्त ये वृद्ध अपने चौथेपन में अपनो के लिए आदमी कम उपयोगी अधिक हो जाते है।'[6]

समय की गति और बदलाव ने नकारात्मक रवैये को मजबूती पारदन की है। सभ्य और असभ्य का प्रश्न उठने लगा है। बदलते समाज को स्वीकार कर पाना आसान नहीं है। ऐसी स्थिति में नकारात्मक वातावरण की निर्मिति होती है। 'पीढ़ियाँ' कहानी में श्यामराव द्वारा अपने माता–पिता के प्रति किए गए व्यवहार के संवेदनात्मक भाव को मार्मिकता से चित्रित किया है। एक उम्र के बाद बुजुर्गों की आदतों में बदलाव होता है। जीवन के अधिकांश अंश छिन लिए जाते हैं। सभ्यता के नाम पर प्रताड़ित किया जाता है। सभ्य और असभ्य में फर्क होता है। आज जो सभ्य है, कल उसे असभ्य की गिनती में गिना जाता है। संतान जिस सभ्य समाज में रहकर पलता और बड़ा होता है, बाद में उसी सभ्य समाज से दूर अपने सभ्य समाज की निर्मिती करता है और अपने परिजनों को असभ्य होने का प्रमाण पत्र देता है। कहानी में श्यामराव अपने पिता शरदराव और माँ जानकी को शहर लाता है। पत्नी सुविधा द्वारा सास–ससुर के व्यवहार में परिवर्तन करने की कोशिश करती है जिससे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है। श्यामराव अपनी पत्नी सुविधा के साथ मुंबई में रहता है, प्रेम विवाह के पश्चात अपने पुत्र विलास के साथ खुशहाल जीवन व्यतीत करता है। शहर में रहते हुए श्यामराव को अपने माता–पिता, गाँव और अपने सगे–सबंधियों की याद सताने लगती है। वह कॉलेज के दिनों को याद करता है 'कॉलेज के दिनों में भी, जब कभी दो–चार दिन की छुट्टी होती, वे अपने गाँव भाग आते थे। अब यहाँ एकांत में रहते हुए उन्हें अपने गाँव के साथ–साथ अपने माँ–बाप की भी याद आने लगे थे।'[7] शहरी जीवन ने गाँव के शुद्ध वातावरण से दूर कर दिया है। श्यामराव चाहता है कि वह अपने माता–पिता को यहाँ बुला ले। पिता शरदराव बहु सुविधा और पोता विलास को पाकर बहुत खुश है। दूसरी तरफ सुविधा के पिता अंबिकाप्रसाद से शरदराव की गहरी मित्रता, ग्रामीण जीवन, लोकगीत, जड़ी–बूटियाँ, खेत–खलिहान, अनाज, त्योहार आदि से संबंधित दोनों एक–दूसरे को सुनने को तैयार है।

सुविधा को अपने सास–ससुर के रहन–सहन के तरीकों को पसंद नहीं करती, जिसके कारण असमंजस्यता की स्थिति पैदा होने लगती है। वह कहती है 'शरदराव चाय को प्लेट में डालकर सुड़क–सुड़क आवाज करते हुए पीते। दाल–भात एक साथ सनकर उसके गोले बनाकर खाते। कई बार टॉइलेट में फ्लश करना भूल जाते।'[8] जब सुविधा अपने असमंजस्यता की स्थिति को पति के समक्ष रखती है 'सुविधा ऐसा है कि उनके जीते रहने का, खाने–पीते का एक तरीका बन गया है। इस उम्र में उनसे कुछ कहा नहीं जा सकता। ये सब तो हमें ही एडजस्ट करना होगा।'[9] अक्सर माँ–बाप अपने बच्चे के लिए अनेक कुर्बानियाँ देते है। अपनी इछाएं मार देते। बच्चों के सपने को साकार करने हेतु इस आशा में कि बुढापें में उसका पुत्र सहारा है। श्यामराव और पत्नी सुविधा के बीच नोक झोंक आरंभ होती है, सुविधा शिकायत लेकर अपने पिता के पास जाती है। अंबिकाप्रसाद अपनी पुत्री को समझाते हुए कहते है–'बेटे, विवाह केवल पति–पत्नी का संबंध नहीं होता, दो परिवारों का संबंध होता है। और इंसान को उन संबंधों को जिलाए रखना होता है।'[10] संबंधों की सच्चाई और यथार्थ से अवगत कराते हुए कहता है 'तो ऐसा करो; उन दोनों को मेरे यहाँ शिफ्ट कर दो, मैं उनके साथ खुशी से रह लूँगा। मेरा सूनापन भी कट जाएगा। कभी–कभी अकेले में मैं बहुत बोर हो जाता हूँ।'[11]

अकेलेपन के दर्द को बयां करती कहानी 'दर्द दिल ही में छुपा ले' में दर्द को दूर करने व भूलाने के कई तरीके हैं, मनुष्य समय–समय पर अन्य का सहारा लेकर जीवन को आसान बनाने का तरीका ढूंढता है। डॉ. विश्वनाथ सेवानिवृत है। पुत्र आशुतोष अमेरिका में स्थाई रूप से सेटेल और वर्षों पहले पत्नी का देहांत होने के कारण, अकेले ही जीवनयापन करना पड़ रहा है। अब तक विश्वनाथ को व्यावसायिक कार्य की व्यस्तता के कारण खालीपन का अहसास न हो पाया, सेवानिवृत के बाद स्वास्थ खराब होने पर खालीपन और गहराने लगी। जब इंसान में खालीपन घर करने लगे, तो दूसरों की खुशी में खुद की खुशी ढूंढता है–'बड़ी से बड़ी जरूरत भी इंसान से बड़ी नहीं होती। इंसान खुश रहे, अपने संपर्क में आए इंसानों को खुश रखे, इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है।'[12]

सेवानिवृत के पश्चात भी विश्वनाथ अस्पताल में अपने सहयोगियों से मिलने, उनका सहयोग करने, घर पर पेड़–पौधों और बाग–बगीचे में अपना मन लगा कर दूसरों को खुश रखने का प्रयास करता–'लेकिन कभी–कभी जब वे निपट अकेले होते उनकी आँखें अतीत छलक आता। मन–प्राणों पर उदासी की काई जम जाती और वे बेचौन हो उठते।'[13] समय के साथ शरीर में बीमारी ने घर करना प्रारंभ दिया। अस्पताल में अपने पुराने पलों को याद करता–'बीच–बीच में कहीं कोई तारा दिख जाता था। एक बड़े चमकते तारे को देखकर उन्हें अनायास ही अपनी पत्नी की याद हो आई। जब तक सरिता जीवित रही, उन्हें कभी अकेलापन महसूस नहीं हुआ था।'[14]

अस्पताल में सिस्टर, डॉक्टर, सभी जिंदादली वाक्यों से स्वयं को खुश रखने की कोशिश करता है। विश्वनाथ कहता है डॉ. अहूजा से–'बस मुझे आपकी यही बात अच्छी लगती है, डॉक्टर मुझ जैसे मरीज को भी आश्वासन देकर जिंदा रखते हो। हँसते हुए डॉ. विश्वनाथ बोले।'[15] डॉ. आहूजा जवाब देते हुए कहता है आप अपने 'विल' और 'जिद' के कारण जींदा है तभी विश्वनाथ कहता है यह 'विल' और 'जिद' कितने दिनों तक चलेगा। जिंदगी को दूसरे को खुशी देकर जिया जाता है। डॉ. विश्वनाथ के वार्ड में हंसमुख मेहता नामक युवक घबराहट से भरे चेहरे के साथ सिफ़्ट हुआ। जिसे विश्वनाथ हौसला अफ़जाही करते हुए ठीक होने का आश्वासन दिया। डॉ. सोनी नए पेशेंट को वार्ड में शिफ्ट करने की बात कही, जिसे विश्वनाथ मना कर देता है। हंसमुख के चेहरे से डर और चिंता को दूर करने के कई तरीके अपनाता है। सड़क के पार टेरेस पर लहलहाते बगीचे की ओर ध्यान आकृष्ट करता है और कहता है–मेरे बिस्तर से सब कुछ साफ–साफ दिखता है। बोगन बेला की फैली हुई लताएं है। लाल, सफेद और पीले फूलों से उसकी डालियाँ लटी पड़ी है। मुंडेर पर दूर तक रंग–बिरंगे गुलाबों के गमलें रखें हैं।'[16] हंसमुख मेहता का ऑपरेशन होता है और ठीक होने लगता है। विश्वनाथ कहता है 'वेल यंग मैन अब ठीक हो न' और आगे उम्मीद का दिलासा देते हुए तकलीफ और दर्द से छुटकारा पाने का नुस्खा देते है–'दर्द दिल ही में चुप ले, मुसकुराना सिख ले।'[17]

विश्वनाथ का स्वास्थ अचानक बिगड़ने लगता है। खांसी बढ़ती है, हानिफ द्वारा लाए गई बिरयानी को छुने को तैयार नहीं। रात को बिस्तर पर खून फैलने के कारण आई. सी. यू. ले जाया जाता है, जब मेहता गहरी नींद में था। सुबह आँख खुली तो विश्वनाथ का बिस्तर खाली था। दोपहर तक इंतजार करते हुए हंसमुख खिड़की के पास खड़ा हो गया ताकि टेरेस की हरियाली का सुख पान कर सके पर 'वहाँ न तो बोगन वेला की लताएं थी, न फूल थे–न गुलाब के गमले थे और न नारियल का छोटा घना–सा पेड़ था। कोई झूला भी उसे वह दिखाई नहीं पड़ा।'[18]

मीता और जीतू की वृद्धाव्यवस्था की कथा बयां करती 'दिन–प्रतिदिन' कहानी में जीतेंन अपनी पत्नी की बीमारी की वजह से नैतिक दिनचर्या में बदलाव करता है। नैतिक जीवन में बदलाव के कारण मन विचलित और अव्यवस्थित–सा होने लगता है। 'सात साल पहले, जब सुमित्रा का डाईगनोज किया गया था, तब से धीरे–धीरे उनकी दिनचर्या बदलने लगी थी। हमेशा कुछ न कुछ लिखने पढने, शहर के साहित्यिक आयोजनों में जानेवाले और यार दोस्तों के साथ होटलों में मटर गस्ती करने वाले जितेन

एक तरह से घर की चार दीवारों में जैसे कैद होकर रह गए थे। सुमित्रा को वह अकेला छोड़ नहीं सकतें थे।'[19]

बुढ़ापे में पति–पत्नी का ही सहारा होता है। बिमारी तभी ठीक हो सकती है जब उसके अंतकरण में आत्म शक्ति निहित हो। जितेन सुमित्रा का पूरा ध्यान रखता है पर कभी–कभी चिड़चिड़ा भी हो जाता है। प्रत्येक दिन बड़ा सा महसूस होने लगता है। अपने रवैये से छुटकारा पाने के लिए अतीत के दिनों को याद करने लगता है–'जिंदगी के इतने सुख हमने साथ–साथ भोगे है तो अब इन दुखों को भी साथ–साथ जी लेंगे। तुम्हारी बिमारी ने मुझे तुम्हारे और भी पास ल दिया है मीत..।'[20] इंतजार की घड़ी धीमें घूमती है। जितेन और मीता दोनों ही मानों एक घड़ी का इंतजार कर रहे हो, जो अनायास ही नहीं आनेवाले बल्कि समय की सीमाओं को पारकर आएंगी जरूर।

जीवन में कई बार व्यक्ति को परिस्थितियों के कारणवश कठोर निर्णय लेने के लिए बाध्य होता है। 'अपने साये' कहानी में जीवनलाल साहनी के चार संतान राकेश, महेश, सुदेश और सुहाना है। जीवनलाल अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में स्वयं को खुशनसीब मानता है कि बेटी कनाडा में सेटेल्ड है और तीनों बेटों की शादियाँ हो चुकी है और अपने व्यवसाय में लगवा दिया है। अब जीवन निश्चिंतता में व्यतीत होगा। अक्सर बुढापें में ऐसी ही कामना होती है, मन में एक संतुष्टि की कामना है। जीवनलाल की पत्नी कौशल्या को गुसलखाने से गिरने के कारण लकवा मार देता है। ठीक होने में समय लगता है। पहलेपहल व्हील चेयर में बहुओं द्वारा घुमाने का चलन था, धीरे–धीरे यह चलन काम होता गया। ज्यादातर समय बिस्तर में लेटी रहने लगी। दवा के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ा। बेटे अपनी औपचारिकता को पूरा करते हुए कभी–कभी हालचाल पुछ लेते थे । जीवनलाल अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए पत्नी के समक्ष समाचार पत्र पढ़ना, बातचीत करना, हसी–मजाक करना आदि के माध्यम से जीवंतता बनाने की कोशिश करता है।

माता–पिता अपने संतान की देखभाल बड़ी तन्मयता के साथ करता है ताकि बुढापे में माता–पिता का न केवल सहारा बने बल्कि ख्याल भी रखे। वर्तमान समय में बच्चे माता–पिता के प्रति नकारात्मकता का भाव रखते हैं, यही बुढापें की सबसे बड़ी विडंबना है। 'वे सोचने लगे कि उन्होंने ऐसा तो नहीं सोच था कि बुढापें में वे इस तरह अलग थलग कर दिए जाएंगे।'21 बच्चों के असहनीय व्यवहार से कठोर निर्णय लेने को बाध्य होता है 'मैंने यह कोठी और फैक्ट्री बेच दी है। एक महीने बाद इन दोनों पर नए मालिकों का कब्जा हो जाएगा। मै कल ही कौशल्या को लेकर होटल में रहने चला जाऊंगा। कौशल्या के देखभाल करने का इंतजाम कर दिया है।'[22]

संदर्भ सूची

1. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 54
2. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 56
3. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 57
4. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 58
5. मनोविज्ञान के सिद्धांत, डॉ. ए.एम.चोचा, रावत प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृष्ट–70
6. वृद्धाव्यवस्था की दस्तक, सीमा दीक्षित, सामाजिक बुक्स, नई दिल्ली, 2016, पृष्ट 14–15
7. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 60
8. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 62–63
9. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 63
10. 1फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 63
11. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 64
12. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 78
13. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 78
14. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 80
15. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 79
16. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 86
17. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 85
18. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 88
19. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 119
20. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 122
21. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 136
22. फ़ैसला तथा अन्य कहानियाँ, देवेश ठाकुर, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ट – 137